

सज्जनता और संयम को स्वीकार करने वाला ही सुखी

-युवाचार्य महाश्रमण

बीदासर, 25 फरवरी।

“दुनिया में दुःख का भी अस्तित्व है। आदमी और प्राणी सुख का अनुभव भी करते हैं तो दुःख भी आते रहते हैं। व्यक्ति में अनेक प्रकार के दुःख आ जाते हैं। जन्म भी अपने आप एक दुःख माना गया एक शिशु गृभस्थ रहता है वहां भी कष्ट का अनुभव होता है तो मृत्यु को भी दुःख माना गया। मृत्यु की बात आने से भी मन में भय पैदा हो जाता है वह भी एक दुःख होता। बीमारी हो जाए तो दुःख है। बुढ़ापा भी दुःख है। बुढ़ापा गहरा हो जाए फिर सेवा करने वाला कोई ठीक न हो तो बुढ़ापा और ज्यादा जटिल भी हो सकता है।”

उक्त विचार युवाचार्य श्री महाश्रमणजी ने उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहे।

युवाचार्य प्रवर ने कहा कि दुःख का मूल कारण है आरंभ। आरंभ के दो अर्थ - असंयम आरंभ तथा हिंसा अपने आप में आरंभ है। व्यक्ति को दुःख होता है तो मानकर के चलें कभी उसने असंयम किया है, कर्म का बंध किया है या हिंसा की है तो हिंसा का तत्कार फल भी मिल सकता है और हिंसा का फल कुछ समय के बाद भी मिल सकता है। आदमी ने असंयम किया खान-पान में असंयम कर दिया, ज्यादा खा लिया पेट में दर्द शुरू हो जाता है। वाणी का संयम नहीं रखा सामने वाले को कुछ भी बोल दिया सामने वाला गुस्से में आ गया असंयम दुःख का बड़ा कारण होता है। असंयम को आदमी छोड़ दे सज्जनता को धारण कर ले तो अनेक दुःखों का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है और सुख-शांति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

दूसरे के दुःख को देखकर मन में संवेदना होती है, कष्टानुभूति होती है उसे भी सज्जनता का लक्षण माना गया है और जो अपनी बड़ाई नहीं करता यह भी सज्जन का लक्षण है। दूसरों के दोष को जो फेलाता नहीं है। दूसरे व्यक्ति के छोटे गुण को बड़ा बताता है, दूसरों की संपन्नता में संतोष को धारण करता है, नीति को नहीं छोड़ता। औचित्य का उल्लंघन नहीं करता। कठोर शब्द कहे जाने पर भी असहिष्णुता, अगंभीरता, अधिरता का परिचय नहीं देता ये आठ लक्षण जिसमें है वह व्यक्ति सज्जन कहलाने का अधिकारी होता है। आदमी असंयम को छोड़कर सज्जनता और संयम को स्वीकार कर ले तो अनेक दुःखों से अपने आप छुटकारा मिल जाता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमारजी ने किया।

- अशोक सियोल

9982903770